इफ़िसियों

1 यीशु मसीह के पवित्र और विश्वसनीय
लोगों के नाम जो इफ़िसुस में हैं, जिन
के लिए परमेश्वर पिता की इच्छा से पौलुस,
यीशु मसीह का प्रेरित है। 2 हमारे स्वामी यीशु
मसीह और स्वर्गिक पिता की ओर से तुम्हें
अनुग्रह[a] और शान्ति मिलती रहे।

3 हमारे यीशु मसीह के पिता और परमेश्वर
की बड़ाई हो, जिन्होंने हमें स्वर्गिक स्थानों में
सारी आत्मिक आशीषों से भर दिया है। 4 इस
लिये कि उन्होंने संसार की नींव डाले जाने से
पहले हमें अपने में चुन लिया था, ताकि हम
उनके सामने पवित्र और बिना किसी दोष के
ठहराए जाएँ। 5 अपनी इच्छा के भले उद्देश्य
के अनुसार पहले ही से उन्होंने प्रेम में यीशु
मसीह के द्वारा हमें अपने गोद लिए हुए बच्चों
की तरह ठहराया है। 6 यह उनकी असीम
कृपा और महिमा की बड़ाई के लिए जिस के
द्वारा उन्होंने हमें अपने प्रिय में स्वीकार किया
है। 7 उन्हीं में हमें उनके खून से आज़ादी यानि
अपराधों की क्षमा, उस अनुग्रह के धन[b] के
कारण है, 8 जिसे उन्होंने सारे ज्ञान और समझ
के साथ हमारे ऊपर उण्डेल दिया है। 9 जिस
भले लक्ष्य की कामना परमेश्वर पिता ने
पहले से कर रखी थी, उसके अनुसार उन्होंने
हम पर अपनी इच्छा के रहस्य को प्रगट
किया। 10 ऐसा इसलिए है, कि वह स्वर्ग और
पृथ्वी की सब बातों को समयों के पूरा हो
जाने तक मसीह में सब कुछ इकट्ठा करें।

11 साथ ही साथ यीशु मसीह के कारण हम
ने परमेश्वर पिता से मीरास पायी है, क्योंकि
उन्होंने हमें पहले ही से चुन लिया और यह
उनकी इच्छा से है। 12 ताकि हम जिन्होंने
पहले से मसीह में भरोसा किया है, महिमा
से भरे परमेश्वर की बड़ाई करें। 13 जब
तुमने सत्य का वचन[c] सुना तब विश्वास
करके प्रतिज्ञा की आत्मा की मोहर प्राप्त
की, 14 वह हमारे उत्तराधिकार के बयाने की
तरह इसलिए दिया गया है, कि परमेश्वर के
खरीदे हुए छुटकारा[d] पाएँ और परमेश्वर की
महिमा की स्तुति हो। यह एक और कारण
है कि हम परमेश्वर की महानता की बड़ाई
करें।

15 इसलिए मसीह पर तुम्हारे विश्वास और
पवित्र लोगों के लिए जो तुम्हारा प्यार है,
16 उसे सुन कर मैं भी तुम्हारे लिए धन्यवाद
के साथ प्रार्थना करने से नहीं रूकता।
17 मेरी बिनती यह है कि हमारे प्रभु यीशु के
परमेश्वर, महिमा के पिता तुम्हें आत्मिक
ज्ञान और प्रकाश और परमेश्वर के ज्ञान
में तुम्हें बुद्धि और ज्योति दें। 18 मैं प्रार्थना
करता हूँ कि तुम्हारे मन[e] की आँखें खुल
जाएँ ताकि तुम जानो कि तुम्हारे बुलाए जाने
की आशा और पवित्र लोगों के लिए उनकी
महिमामय मीरास की दौलत क्या है। 19 और
हम विश्वास करने वालों के लिए उनकी
अपार शक्ति की बढ़ती जाने वाली महानता
क्या है। यह उनकी शक्ति के प्रभाव के उस
काम के कारण है, 20 जो परमेश्वर ने यीशु
मसीह में किया कि यीशु को मरे हुओं में से
जी उठा कर और स्वर्गिक स्थानों में अपने
दाहिने हाथ बैठा कर, 21 और यीशु को अभी
और आने वाले समयों के किसी भी शासन,
अधिकार, शक्ति, प्रभुता और नाम के बहुत
ऊपर ठहराया। 22 सब कुछ उनके पैरों के

[a] **1.2** शर्तहीन कृपा [b] **1.7** कृपा के खज़ाने [c] **1.13** मुक्ति का संदेश [d] **1.14** मुक्ति, उद्धार [e] **1.18** समझ

नीचे करके उन्हें प्रमुख ठहराकर चर्च को दे
दिया। 23 चर्च उनकी देह है, मसीह से भरपूर
है, जो अपनी उपस्थिति से सभी स्थानों को
भर देते हैं।

2 तुम जो अपने अपराधों और दुष्टता में
मरे हुए थे उन्होंने तुम्हें जीवन दिया।
2 पिछले समयों में तुम इस संसार के तौर
तरीकों, आकाश के अधिकार के शासक[a]
यानि वह आत्मा जो अभी भी आज्ञा न मानने
वालों में काम करता है, उसी के अनुसार
जीवन जीते थे। 3 और हम सभी उन्हीं में से
थे, जिन का जीवन, पुराने स्वभाव, मन की
लालसाओं और उनको पूरा करने में बीत
रहा था और दूसरों के समान स्वभाव से
परमेश्वर की सज़ा के अधीन थे। 4 लेकिन
परमेश्वर ने जो दया में धनी हैं, अपने बड़े
प्रेम की वजह से, हमें प्यार दिया। 5 उस समय
भी जब हम अपनी दुष्टता की स्थिति में मरे
हुए थे, तब परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ
जिला दिया[b]। 6 तथा हमें अपने साथ उठा
कर स्वर्गिक स्थानों में यीशु मसीह के साथ
बैठा दिया। 7 ताकि आने वाले युगों में वह
यीशु मसीह के द्वारा जो हमारे लिये दयालु हैं,
उस असीम कृपा के बढ़ते हुए महान धन को
दिखा सकें। 8 इसी अनुग्रह[c] और विश्वास
के द्वारा से तुम्हें मुक्ति मिली है। यह तुम्हारी
किसी योग्यता से नहीं, यह मुक्ति परमेश्वर
की तरफ़ से ईनाम है। 9 यह कर्मों से नहीं
मिलती है ताकि कोई घमण्ड न कर पाए।
10 हम उनकी कारीगरी हैं और मसीह यीशु में
उन भले कामों के लिए बनाए गए हैं, जिन्हें
परमेश्वर ने पहले ही से हमारे लिए ठहराया
है।

11 इसलिए याद करो, कि पहले तुम
शारीरिक रीति से खतना वालों[d] के द्वारा
गैरयहूदी और बिना “खतना वाले” कहलाते
थे। 12 उस समय तुम मसीह के बिना इस्राएल
से बाहर और प्रतिज्ञा की वाचा के लिए
अनजान और इस जीवन में बिना परमेश्वर
पिता के और आशाहीन थे। 13 तुम जो एक
समय बहुत दूर थे, अब यीशु मसीह और
उन्हीं के खून के द्वारा पास लाए गए हो।

14 यीशु के द्वारा ही मेल है, जिन्होंने दोनों[e]
को एक किया और हमारे बीच बँटवारा करने
वाली दीवार को ढा दिया। 15 जिस यहूदी
निमयशास्त्र की व्यवस्था ने गैरयहूदियों को
यहूदियों से अलग कर रखा था उसे यीशु ने
अपनी मौत से खत्म कर डाला। इन दोनों
के बीच मेल करके अपने में ‘एक नया
इन्सान’ बनाया। 16 यह भी कि यीशु क्रूस
द्वारा परमेश्वर के साथ एक देह में सुलह[f]
कराएँ, जिस की वजह से उन्होंने दुश्मनी को[g]
खत्म कर डाला। 17 तुम गैरयहूदी जो दूर थे
और यहूदी जो पास थे, उन सब को खुशी
की खबर दी है। 18 ताकि उन्हीं के द्वारा पिता
तक पवित्र आत्मा से हम दोनों की पहुँच हो।

19 इसलिए अब तुम विदेशी और अजनबी
नहीं रहे, लेकिन पवित्र लोगों के संगी
नागरिक हो और परमेश्वर पिता के घराने
के हो। 20 यीशु मसीह जिस इमारत का
मुख्य पत्थर हैं, उन्हीं में प्रेरितों और
भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर तुम बनाए गये
हो। 21 यीशु में पूरी इमारत बनी है और उन्हीं

[a] **2.2** शैतान [b] **2.5** अर्थात् असीम दया के कारण हमें मुक्ति मिली [c] **2.8** शर्तहीन कृपा [d] **2.11** यहूदियों
[e] **2.14** यहूदियों-गैरयहूदियों [f] **2.16** मेल [g] **2.16** यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच

में ही विश्वासी लोग जुड़ कर पवित्र भवन
बनते जाते हैं। 22 तुम भी एक साथ मिल कर
परमेश्वर के लिए एक ऐसा निवास स्थान
बनाए जाते हो, जहाँ परमेश्वर अपने आत्मा
द्वारा रहते हैं।

3 इसी कारणवश, मैं पौलुस तुम गैर
यहूदियों के लिए यीशु मसीह का कैदी
हूँ, 2 इसलिए कि तुमने परमेश्वर की उस
कृपा के दिए जाने के सम्बन्ध में सुना है, जो
तुम्हारे लिए मुझे दी गयी। 3 मसीह के रहस्य
को कैसे उन्होंने स्वर्गिक ज्ञान[a] के द्वारा मुझे
बतलाया,[b], 4 ताकि इस चिट्ठी को पढ़ने पर,
इस छिपी बात के विषय में मेरी समझ को
तुम जान पाओ। 5 जैसा अभी आत्मा द्वारा
उनके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं
पर प्रगट किया गया है, पहले के युगों में यह
भेद मनुष्यों पर प्रगट नहीं किया गया था।
6 वह यह कि यहूदियों के साथ एक ही देह में
गैर यहूदी, मीरास, सदस्यता और सुसमाचार
द्वारा उन्हीं वायदों में हिस्सा पाएँ। 7 जिस
सुसमाचार का मैं सेवक बना, उस परमेश्वर
पिता की सामर्थ के असर[c] के अनुसार, जो
मुझे उनकी शक्ति के प्रभावशाली रूप से
कार्य करने की वजह से दिया गया। 8 मैं
सभी पवित्र लोगों में छोटे से भी छोटा हूँ,
मुझे यह कृपा मिली कि मैं गैरयहूदियों को
मसीह की अथाह सम्पति के बारे में बता
सकूँ। 9 और सभी को यह दिखा दूँ कि दुनिया
की शुरूआत से सृजनहार में छुपी सच्चाई
का महत्व[d] क्या है, जिन्होंने यीशु मसीह के
द्वारा सब कुछ बनाया था। 10 ताकि अभी
परमेश्वर के तमाम ज्ञान को मण्डली[e] के
द्वारा आकाश[f] में प्रधानों[g] और अधिकारियों
को बताया जा सके। 11 जिसे उन्होंने हमारे
स्वामी यीशु मसीह में अपनी अनन्तकालिक
मनसा[h] को पूरा करने के लिए हमें ठहराया
था। 12 जिस में उन पर विश्वास करने से,
हमें यह साहस और भरोसा हुआ कि हमारी
पहुँच परमेश्वर तक हो। 13 इसलिए मैं तुम
से बिनती करता हूँ, कि तुम्हारी वजह से जो
दुख मुझे हैं, उनके कारण हिम्मत मत हारो,
क्योंकि यही तुम्हारे लिए आदर की बात है।
14 इसलिए मैं उस पिता के सामने अपने
घुटने टेकता हूँ। 15 जिन के द्वारा स्वर्ग और
पृथ्वी के हर एक घराने का नाम रखा जाता
है[i], 16 कि उनकी महिमा के धन के अनुसार
वह ऐसा होने दें, कि तुम भीतरी जीवन में
उनकी आत्मा की मदद से मज़बूत किए
जाओ। 17 और विश्वास के द्वारा मसीह
तुम्हारे दिलों[j] में बसें, 18 ताकि परमेश्वरीय
प्यार में गहराई से जड़ पकड़ते जाओ और
सभी पवित्र लोगों के साथ समझ सको, कि
इस प्यार की चौड़ाई, लम्बाई, गहराई और
ऊँचाई क्या है। 19 यह भी कि मसीह के उस
प्यार को जान सको जो समझ के बाहर है,
ताकि तुम परमेश्वर पिता की सारी भरपूरी
से भर जाओ।
20 अब जो ऐसे सामर्थी हैं कि हमारे जीवन
में काम करने वाली शक्ति के द्वारा हमारे
माँगने या सोचने से कहीं अधिक करने के
योग्य हैं, 21 पीढ़ी से पीढ़ी तक परमेश्वर का
सम्मान चर्च में और मसीह यीशु में होता रहे।

4 इसलिए मैं मसीह यीशु का कैदी तुम से
यह कहता हूँ, कि अपनी बुलाहट के
लायक जीवन जियो। 2 पूरी दीनता, नम्रता
और धीरज के साथ प्यार में एक दूसरे

[a] 3.3 प्रकाश [b] 3.3 जैसा मैंने पहले लिखा था [c] 3.7 कृपा के ईनाम [d] 3.9 खासियत [e] 3.10 चर्च
[f] 3.10 स्वर्गिक स्थानों [g] 3.10 शासकों [h] 3.11 इरादे [i] 3.15 या अस्तित्व है [j] 3.17 जीवनों

की सहो। 3 मेल के बन्धन में पवित्र आत्मा
की एकता को बनाए रखने की कोशिश
करो। 4 देह एक ही है, एक आत्मा है,
ठीक उसी तरह तुम अपनी बुलाहट की एक
आशा में बुलाए गये हो। 5 एक ही प्रभु, एक
ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा है, 6 एक
परमेश्वर जो सब के पिता हैं, जो सब के
ऊपर[a] सब के बीच और सब में हैं।

7 लेकिन मसीह ने अपनी उदारता की माप
से हम में से हर एक को शर्तहीन कृपा दी है[b]।
8 इसलिए वह कहता है:"जब वह ऊँचाई[c] पर
चढ़े उन्होंने गुलामी को बाँधने में अगुवाई की
और लोगों को ईनाम[d] दिए"

9 "उनके चढ़ने" का क्या मतलब है?
यह कि, वह पहले पृथ्वी के निचले भागों
में भी उतरे? 10 वह जो नीचे उतरे, वही
हैं जो आकाश से ऊपर चले गए, ताकि
सब कुछ में समा जाएँ। 11 वह यीशु ही
थे जिन्होंने अलग-अलग लोगों को प्रेरित,
भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार देने वाले, पास्टर
और शिक्षक ठहरा कर दे दिया। 12 ताकि
पवित्र लोग सेवा के लिए तैयार किए
जाएँ, और मसीह की देह[e] उन्नति करती
जाए। 13 जब तक हम विश्वास की एकता,
परमेश्वर पिता के बेटे के पूर्ण ज्ञान, बुद्धिमान
व्यक्ति बनने और मसीह के पूरे डील-डौल
तक न बढ़ जाएँ। 14 ताकि हम बच्चों के समान
इधर से उधर तमाम सिद्धान्तों के झोकों से
लोगों की चालाकी, धूर्तता, और धोखाधड़ी
से हिलाए डुलाए न जाएँ। 15 लेकिन प्यार के
साथ सच बोलते हुए मसीह के समान जो
चर्च[f] के प्रधान हैं, हर तरह से और अधिक
बढ़ते जाएँ, 16 जिस से सारी देह, प्रत्येक जोड़
में एक साथ बंध कर बढ़ती जाती है। और
हर एक अंग[g] के अपने-अपने काम[h] करते
रहने से, देह प्रेम में उन्नति करती जाती है।

17 मैं यह मसीह में ज़ोर देकर इसलिए
ऐलान करता हूँ: कि तुम दूसरों[i] की तरह
बेकार के सोच विचार का जीवन न बिताओ।
18 क्योंकि उस नासमझी की वजह से जो उन
में है और मन की सख्ती की वजह से उनकी
समझ अंधेरी हो गयी है और वे परमेश्वर
की ज़िन्दगी[j] से अलग हो गए हैं। 19 वे हर
तरह से सुन्न हो गए हैं, क्योंकि उन्होंने अपने
आप को हर तरह के नाजायज़ कामों और[k]
कामुकता को सुपुर्द कर दिया

20 तुमने मसीह से ऐसा करना नहीं सीखा है,
21 इसलिए कि उनके[l] बारे में तुमने सब कुछ
सुना है और उस सत्य को जो यीशु में है जान
लिया है, 22 अपने पुराने मनुष्यत्व को उतार
डालो जो भरमाने वाली अभिलाषाओं[m] की
वजह से भ्रष्ट है 23 और अपने मन की आत्मा
में[n] नए होते जाओ। 24 नए मनुष्यत्व[o] को
पहन लो, जो परमेश्वर की समानता में-सच्चे
खरेपन और पवित्रता में बनाया गया है।

25 इसलिए झूठ को हटा कर, प्रत्येक
व्यक्ति को अपने पड़ोसी से सच बोलना
चाहिए, क्योंकि हम एक दूसरे के सदस्य
हैं। 26 गुस्से में आकर, गलत मत कर बैठो।
सूरज ढलने से पहले तुम्हारा गुस्सा ठंडा
हो जाए। 27 शैतान को कुछ भी मौका मत
दो। 28 जो इन्सान पहले चोरी किया करता
था, वह आगे को ऐसा न करे। इसके
बजाए उसको अपने हाथ से कुछ भलाई

---

[a] **4.6** सब से बड़े [b] **4.7** या अनुग्रह दिया है [c] **4.8** स्वर्ग [d] **4.8** वरदान [e] **4.12** मण्डली [f] **4.15** मण्डली
[g] **4.16** भाग [h] **4.16** भूमिका को [i] **4.17** गैर यहूदियों [j] **4.18** जीवन [k] **4.19** लगातार लालच
[l] **4.21** यीशु के [m] **4.22** धोखे की चाह [n] **4.23** विचारों और रवैय्यों में [o] **4.24** नयी इन्सानियत

करने के लिए मेहनत करनी चाहिए, ताकि
ज़रूरतमन्द लोगों को देने के लिए उसके
पास कुछ हो।
29 तुम्हारे मुँह से कोई गंदी बात न निकले,
लेकिन वही जो अच्छी है और तरक्की[a] के
लिए फ़ायदेमंद है। ऐसी बात जो सुनने वालों
के जीवन में भलाई[b] लाए। 30 तुम परमेश्वर
पिता के आत्मा को दुख न पहुँचाओ, क्योंकि
उन्हीं के द्वारा तुम पर छुड़ाए जाने वाले
दिन के लिए मोहर लगाई गयी है। 31 सारी
कड़वाहट, तैश में आना, क्रोध, झगड़ा, बुरा
बोलना और चोट पहुँचाने वाली बातें तुम से
दूर ही रहें। 32 बल्कि तुम तरस से भरे रहो
और कृपा करने वाले बनो। तुम एक दूसरे
को माफ़ करने वाले बनो, जैसा परमेश्वर ने
मसीह के कारण तुम्हें माफ़ किया है।

5 इसलिये प्यारे बच्चों की तरह, परमेश्वर
की बात मानने वाले बनो। 2 जिस तरह
से मसीह ने हम से प्रेम किया और खुद को
खुशबूदार इत्र की तरह परमेश्वर के लिए एक
भेंट और बलिदान के रूप में चढ़ा दिया, उसी
तरह प्यार-मोहब्बत का जीवन जियो।
3 जैसा कि पवित्र लोगों के लिए उचित है,
तुम्हारे बीच अनैतिक यौन सम्बन्ध, सभी
तरह की अशुद्धता या लालच जैसी बातें
सुनने में भी न आएँ। 4 और तुम्हारे बीच
गंदी और बेवकूफ़ी की बातें, भद्दा मज़ाक
जो उचित नहीं है, न हो, बल्कि धन्यवाद
दिया जाना हो, 5 पर तुम यह जानते हो कि
अनुचित यौन सम्बन्ध में लिप्त व्यक्ति,
अशुद्ध व्यक्ति और लालची इन्सान की[c],
मसीह और परमेश्वर के राज्य में कोई
हिस्सेदारी नहीं है। 6 कोई व्यक्ति तुम्हें
खोखली बातों से धोखा न दे, क्योंकि इसी
कारणवश परमेश्वर की सज़ा आज्ञा न मानने
वालों पर आती है। 7 इसलिए ऐसे लोगों के
साथ हिस्सेदार न बनो।
8 क्योंकि एक समय था, जब तुम अंधियारा
थे, लेकिन अब यीशु में उजाला हो। इसलिये
उजाले[d] की सन्तान की तरह जीवन जियो।
9 इसलिए कि रोशनी का असर सब तरह की
अच्छाई, धार्मिकता और सच्चाई में है। 10 यह
मालूम करते हुए कि यीशु को क्या भाता
है, 11 अँधियारे के बेकार के कामों के साथ
किसी तरह की साझेदारी मत रखना, लेकिन
उन्हें सब के सामने प्रगट करना। 12 क्योंकि
उन बातों के बारे में जिन्हें वे छिप कर करते
हैं, मुँह से कहने में भी शर्म आती है। 13 लेकिन
वे सभी बातें जिन का खुलासा किया जाता
है, रोशनी के द्वारा दिखायी देती हैं। इसलिए
कि जो भेद खोलने वाली है, वह रोशनी ही
है। 14 इसलिए लिखा है,[e], “तुम जो सो रहे
हो, जाग जाओ और मरे हुओं में से जी उठो,
और यीशु की रोशनी तुम्हें मिल जाएगी।”
15 इसलिए गौर से देखो कि तुम बेवकूफ़ों
की तरह नहीं, लेकिन अक्लमन्दों की तरह
चलते हो, 16 समय की कीमत जानो, क्योंकि
दिन बुरे हैं। 17 इसलिए नादान मत बनो,
बुद्धिमानी से समझो, कि यीशु की इच्छा
क्या है। 18 नशे से दूर रहो, क्योंकि इस से
ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है, लेकिन पवित्र
आत्मा से भरपूर होते जाओ। 19 आपस में
एक दूसरे से और मन में यीशु के लिए भजन,
गीत और आत्मिक गीत गाते और गुनगुनाते
रहो। 20 हमारे स्वामी यीशु मसीह के नाम
में परमेश्वर पिता को हमेशा सब बातों में
धन्यवाद देते रहो।
21 और परमेश्वर के डर में एक दूसरे के
अधीन होते जाओ।

[a] **4.29** उन्नति [b] **4.29** अनुग्रह [c] **5.5** क्योंकि ऐसे लोग मूर्तिपूजक हैं [d] **5.8** ज्योति [e] **5.14** वह कहते हैं

22 पत्नियो, अपने पतियों की अधीनता में
ऐसे रहो, जैसे यीशु मसीह के। 23 क्योंकि पति
भी पत्नी का प्रधान[a] है, जिस तरह से मसीह,
चर्च[b] के प्रधान हैं, इसी देह के वह बचाने
वाले[c] हैं। 24 लेकिन जिस तरह से चर्च मसीह
की अधीनता स्वीकार करता है, पत्नियों
को भी सभी बातों में अपने पति की माननी
चाहिए।
25 पतियो, अपनी पत्नियों से प्यार करो,
जिस तरह से यीशु ने चर्च से प्यार किया और
अपने आप को उसके लिए दे दिया, 26 ताकि
वह उसे वचन के पानी से धोकर शुद्ध करे।
27 और मसीह अपने आपके लिए एक तेज
से भरा चर्च तैयार करें, जिस में दाग या
झुर्रियाँ न हों, लेकिन पवित्र और निष्कलंक
ठहरे। 28 इसलिए पतियों को अपनी पत्नियों
से इस तरह प्यार करना चाहिए, जैसे वे
अपनी देह से करते हैं। जो अपनी पत्नी
से प्यार करता है, वह खुद से प्यार करता
है। 29 कभी भी कोई व्यक्ति अपनी देह से
नफ़रत नहीं करता है, लेकिन वह उसकी
देख-भाल करता है, जैसे यीशु चर्च के साथ
करते हैं। 30 क्योंकि हम उनकी देह,[d] के भाग
हैं। 31 "इसलिए एक पुरुष अपने पिता और
माता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से जोड़ा
जाएगा, और वे दोनों एक तन हो जायेंगे।"
32 यह एक बड़ा रहस्य है, लेकिन मैं तो
मसीह और चर्च के बारे में कह रहा हूँ।
33 फिर भी तुम में से हर एक व्यक्ति अपनी
पत्नी से ऐसा प्रेम रखे, जैसा वह खुद अपने
आप से रखता है; पत्नी को भी अपने पति
की इज़्ज़त करनी चाहिए ।

6 बच्चो, यीशु में, अपनी माताजी और
अपने पिताजी का कहना मानो, क्योंकि
ऐसा करना सही है। 2 "अपने पिता और माता
का आदर करना", ऐसी पहली आज्ञा है,
जिस के साथ एक वायदा जुड़ा हुआ है। 3 वह
वायदा यह है "कि तुम्हारा भला हो और इस
दुनिया में तुम लम्बे समय तक जीवित रहो।"
4 बच्चे वालो, अपने बच्चों को गुस्सा करने
के लिए मत उकसाओ, लेकिन यीशु की
सहायता से[e] पालन-पोषण और डाँट-डपट
करो।
5 हे नौकरो, डरते-काँपते और मन की
सच्चाई से अपने मालिक की आज्ञा का पालन
इस तरह करो, जैसे कि यीशु के सेवक हो।
6 तुम दिखाने या लोगों को खुश करने के
लिए सेवा मत करो, लेकिन मसीह के गुलाम
की तरह उन्हीं की सेवा समझ कर 7 दिल से
परमेश्वर पिता की इच्छा पूरी करने के लिए
सेवा करो। 8 यह जानते हुए कि जो व्यक्ति
भला करता है वह चाहे नौकरी करता हो या
खुद का व्यवसाय चला रहा हो, उसे यीशु
मेहनताना देंगे।
9 तुम मालिको, अपने नौकरों को धमकी
मत दो। उनके साथ भला व्यवहार करो। यह
जान लो कि तुम्हारे मालिक परमेश्वर स्वर्ग
में हैं और वे किसी का पक्षपात नहीं करते
हैं।
10 अन्त में, मेरे भाईयो प्रभु में और
उनकी शक्ति के प्रभाव से मज़बूत होते
जाओ। 11 परमेश्वर के सभी हथियारों[f]
को पहन लो, ताकि तुम शैतान की बुरी
चालों के सामने खड़े रह सको। 12 क्योंकि
हम इन्सान के विरोध में नहीं हैं परन्तु
आकाश-मण्डल में प्रधानों, अधिकारियों,
इस संसार के अन्धकार के हाकिमों और
दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से संघर्ष करते
हैं। 13 इसलिए तुम परमेश्वर के सभी

[a] **5.23** सिर [b] **5.23** देह [c] **5.23** उद्धारकर्ता [d] **5.30** मांस और हड्डी [e] **6.4** शिक्षा से [f] **6.11** गुणों

हथियारों को स्वीकार कर लो, ताकि तुम बुरे
दिन में सब कुछ सामना करने के बाद स्थिर
रहो। 14 इसलिए सच्चाई की पेटी[a] से अपनी
कमर कस कर और धार्मिकता की झिलम
पहनकर, 15 और पाँवों में मेल के सुसमाचार
की तैयारी के जूते पहन कर 16 उन सब के
साथ विश्वास की ढाल लेकर मज़बूत बने
रहना, जिस से तुम दुष्ट के जलते तीरों को
बुझा सको। 17 मुक्ति[b] का टोप और पवित्र
आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन
है, ले लो। 18 सब तरह की बिनतियों[c] के
साथ हर समय पवित्र लोगों के लिए निरन्तर
धीरज से प्रार्थना करते रहो।,
19 और मेरे लिए भी प्रार्थना करो, इसलिये
कि बोलने का अवसर मिलने पर सुसमाचार
के रहस्य को साहस से बताने के लिए मैं
अपना मुँह खोल सकूँ। 20 इसी कारणवश
मैं जंजीर में जकड़ा हुआ राजदूत हूँ। प्रार्थना
करो ताकि जिस तरह से हिम्मत से मुझे संदेश
देना चाहिए, मैं दे सकूँ।
21 तुखिकुस जो प्रिय भाई और मसीह
का विश्वसनीय सेवक है, सब कुछ तुम्हें
बताएगा, ताकि तुम मेरी हालत जान सको
कि मैं क्या कर रहा हूँ। 22 इसी वजह से
मैंने उसे तुम्हारे पास भेजा है, कि तुम हमारी
हालत जानो और वह तुम्हारे दिलों[d] की
हिम्मत बढ़ाए।
23 हमारे भाईयों और बहनों को यीशु मसीह
और परमेश्वर पिता की ओर से शान्ति और
विश्वास के साथ प्रेम प्राप्त हो। 24 जो लोग
सच्चाई से यीशु मसीह से प्यार करते हैं, उनके
ऊपर अनुग्रह[e] बना रहे।

[a] **6.14** बेल्ट [b] **6.17** उद्धार [c] **6.18** प्रार्थनाओं [d] **6.22** मनों [e] **6.24** कृपा

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com